डिक्टेशन-176

कांग्रेस संगठन, अगर भारत में खेलों का स्तर बढ़ाना है तो खेलों से राजनीति को दूर हटाना होगा क्योंकि ऐसे में खेलों के प्रमुख पद पर ऐसे लोग है जिन्हें खेलों की समझ बिल्कुन नहीं है, वो सिर्फ पैसा कमाने की ओर ध्यान देते हैं ना की खिलाडियों को मिलने वाली पर्याप्त सुविधाओं पर। इसके अलावा दुनिया के बाकी देशों को देखा जाये तो वो बच्चों को छोटी उम्र से भी खेलों की ट्रेनिंग देते हैं और ऐसा ही कुछ हमें भी अपनाना होगा। बच्चों को अगर शुरूआती उम्र से ही बढ़िया ट्रेनिंग दी जाये तो वो आगे चलकर काफी बेहतर प्रदर्शन कर सकते हैं। खेलों में भी टेक्नोलॉजी काफी आगे बढ़ गई है लेकिन इनका प्रयोग क्रिकेट, टेनिस जैसे बड़े बड़े खेलों में ही किया जाता है बल्कि बाकी खेलों में भी खिलाड़ियों और कोचों को पर्याप्त टेक्नोलॉजी उपलब्ध कराई जानी चाहिए ताकि खिलाडियों को बेहतर ट्रेनिंग मिल सके।

सब के लिए कोर्ट मैरिज का विकल्प है सभी को 18 साल की उम्र में वोट डालने का अधिकार है और लड़कों के लिए 21 साल उम्र निर्धारित की गई है और यह सभी पर लागू होती है जनमानस की भलाई और किसी भी प्रकार के मतभेद से बचाने के लिए इस तरह की कानून व्यवस्था हमारे देश में बनाई गई है सभी नागरिक को समान अधिकार हमारे देश का नियम है जो सब पर लागू होता है। शिक्षा व्यक्ति के अंतर्निहित पूर्णता को अभिव्यक्त करता हैं, शिक्षा मनुष्य में स्वभाव सिद्ध है कोई भी शिक्षा बाहर से नहीं आती सब अंदर ही है हम जो कहते हैं कि मनुष्य जानता है यथार्थ में मनुष्य की मानसशास्त्र–संगत भाषा में हमें कहना चाहिए कि वह आविष्कार करता है किसी भी बात को प्रकट करता है, व्यक्ति जो कुछ सीखता है वह वास्तव में एक अविष्कार करना ही है हम कहते हैं कि न्यूटन ने गुरुत्वाकर्षण का आविष्कार किया लेकिन उसके मन में यह बात थी उस समय आया तो उसने जान लिया कि उसने उसका हल ढूंढ निकाला, संसार को जो कुछ भी शिक्षा का ज्ञान प्राप्त होता है वह सब मन से ही निकला है मन से शिक्षा ओर शिक्षा से अविष्कार और शिक्षा से विकास निश्चित है परंतु यह सब की धारणा होती है।मनुष्य का चरित्र उसकी विभिन्न प्रवृत्तियों का समिष्ट है। उसके मन की समस्त झुकावों का योग्य है। सुख और दुख ज्यो-ज्यो व्यक्ति की आत्मा पर से होकर गुजरते हैं वे उस पर अपनी-अपनी छाप या संस्कार छोड़ जाते हैं और इस संस्कारों का प्रभाव व्यक्ति की शिक्षा पर भी निर्भर करता है हम जो शिक्षा लेते हैं हम वैसे ही बन जाते हैं और यह हमारे विचारों के प्रभाव से होता है जिस प्रकार शिक्षा थोड़ी थोड़ी ग्रहण करने के बाद हमारे चरित्र का निर्माण करती हैं उसी तरह व्यक्ति का चरित्र का गठन होता है जैसे लोहे के टुकड पऱ हथौडे पर हल्की चोट के सामान है और हम जो बनना चाहते हैं वह बन जाते हैं उसी प्रकार शिक्षा से व्यक्ति के विचार सजीव होते हैं उसकी दौड़ बहुत दूर तक होती है इसलिए व्यक्ति को विचारों में सावधान रहना

संकलनकर्ता:- राजन निकास, महेन्द्र शर्मा, एवं अंकित विश्नोई
Copyright ©by Shorthand Online
All rights are reserved. No part of this document may be reproduced stored in a retrieval system of transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Shorthand Online.

चाहिए और अपनी शिक्षा की ओर अग्रसर होना चाहिए और अपने चरित्र का निर्माण में शिक्षा का प्रयोग अत्यधिक करना चाहिए। संपूर्ण शिक्षा तथा समस्त अध्ययन का एकमेव उद्देश्य है व्यक्तित्व को गढ़ना। परंतु हम यह ना करके केवल बाहरी रंग पर ही पानी चढ़ाने का प्रयत्न करते हैं जहां व्यक्तित्व का ही अभाव है। कुल शब्द 566 गति शब्द प्रति मिनिट 100 Dictation Recoded by Rajan Nikas

www.shorthandonline.com

संकलनकर्ता:- राजन निकास, महेन्द्र शर्मा, एवं अंकित विश्नोई

Copyright ©by Shorthand Online
All rights are reserved. No part of this document may be reproduced stored in a retrieval system of transmitted in any form or by any means, electronic, mechanical photocopying, recording or otherwise, without prior permission of Shorthand Online.